03/07/2025 का 3
होमवर्क

सर्वोदय - महात्मा गाँधी

इस प्रकार सर्वोदय शब्द बहुत व्यापक है। यह एक नया जीवन दर्शन है। एक नई समाज की रचना है। दादा धर्माधिकारी ने कहा - "सर्वोदय से तात्पर्य है सबका उदय, सबका उत्कर्ष, सबका विकास। सर्वोदय के इस भावार्थ के अन्तर्गत एक सहज व्यापकता है जिसमें किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं है, न दलगत राजनीति है न ही शोषण। ~~इसके~~

इसके उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए भारतन कुमारप्पा ने लिखा है - "सर्वोदय से आशय है सबका भला। इस आधार पर सभी व्यक्ति प्रेम से बंधे होंगे, जिसमें कोई भेदभाव नहीं होगा, राजा तथा किसान, हिन्दू तथा मुसलमान, छूत तथा अछूत, गोरे और काले, अपराधी एवं संत समानता पर होंगे। सर्वोदय समाज में सभी सदस्य समान होंगे, प्रत्येक को उसके परिश्रम का उचित प्रतिफल मिलेगा। सब व्यक्ति समाज के निर्बल व्यक्तियों की रक्षा तथा उनकी संरक्षा का कार्य करेंगे। इस प्रकार सभी व्यक्ति भला करने में सहायक होंगे।

गाँधी जी की मान्यता है कि सर्वोदय एक मार्ग है, एक मंजिल है जिस पर पहुँचना है। मंजिल तक पहुँचने के लिए रास्ता कठिन हो सकता है। रास्ते में पहाड़ भी आ सकते हैं और खाई-खंदक भी आ सकते हैं

किन्तु ये साधन हमें मंजिल तक जाने से रोक नहीं सकते। यहाँ यह बात भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि गाँधी जिसे साध्य मानते थे वही गाँधी का साधन भी होता था। इसलिए उनका सर्वोदय दर्शन साध्य और साधन दोनों है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि "सर्वोदय" शब्द शब्दकोश की बहुत बड़ी खोज है। इस शब्द की महिमा के सम्बन्ध में गाँधीजी के अनन्य शिष्य विनोबा भावे ने लिखा - "सर्वोदय की बुनियाद है सत्य निष्ठा परन्तु इसके साथ ही अपने आप में यह एक क्रांतिकारी शब्द है। गाँधी के निर्वाण के पश्चात सर्वोदय समाज की कल्पना लोगों में फैल गई, परन्तु प्रश्न यह कि सर्वोदय समाज है क्या इसका संगठन किस प्रकार होगा? परन्तु यह किसी प्रकार का संगठन नहीं है।

सर्वोदय शब्द कहता है कि हमें चन्द लोगों का उदय नहीं करना है, अधिक से अधिक लोगों का उदय नहीं करना है बल्कि सबके उदय से ही संतोष होगा। छोटे-बड़े, जड़-बुद्धिमान सबका उदय होगा तभी हम चैन लेंगे। ऐसा विशाल भाव यह शब्द हमें दे रहा है।